विश्व विद्या पीठ

जाँच समिति के लिये आवश्यकीय दस्तावेज :—

① जीवन विद्या न्यास – उससे सम्बंधित सभी दस्तावेज
② विश्व विद्या पीठ की आवश्यकता एवं परिचय
③ पूर्ववर्ती शिक्षा की समीक्षा एवं मूल्यांकन
④ प्रस्तावित मानवीय शिक्षा का प्रस्ताव और स्वरुप (मूल अवधारणा)
⑤ मानवीय शिक्षा की अवधारणा, पाठ्यक्रम, उद्देश्य, एवं आवश्यकता
⑥ व्यवहार व व्यवसाय शिक्षा का संतुलित पाठ, पाठ्य क्रम का स्वरुप स्पष्ट रुप मे कक्षा 1 से 12 एवं 4 वर्षीय बी.टेक. पाठ्य क्रम
⑦ शिक्षा मे स्वायत्तता का ~~स्वरूप~~ उद्देश्य का स्वरूप।
⑧ मानवीय शिक्षा की प्रबोधन विधि, पारंगत व्यक्तियो का नाम एवं शिक्षण विधि
⑨ परामर्शदात्री समिति का नाम
⑩ स्रोत, प्राप्त साधन, अपेक्षित साधन
⑪ तकनीकी प्रारुप के क्रम मे प्रथम कक्षा का अक्षर ज्ञान विधि का चार्ट,

गीतो का एक फाइल।
कक्षा एक में चार्ट लगाये।
चार्ट के अनुसार प्रमाणो को प्रस्तुत करना।
– अक्षर बोध
– संख्या
– खेल
– मूल्यांकन विधि
– पाठ्य क्रम विधि

विश्व विद्या पीठ

मानवीय शिक्षा का संक्षिप्त रुप [मुख पृष्ठ]
मानवीय शिक्षा-संस्कार का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय कुंठा [बेरोजगारी और ऋणभार] का निराकरण है। इसे स्वायत्त परिवार, स्वायत्त ग्राम, स्वायत्त राष्ट्र के रुप में समझा गया है। जिसके लिये प्रत्येक मनुष्य प्यासा है। इसके लिये सभी सार्थक ज्ञान [विवेक सम्मत विज्ञान और विज्ञान सम्मत विवेक] और तदनुसार विचार शैली, शास्त्र एवं योजनाओं को हम प्राप्त कर चुके हैं। जिसका स्रोत मध्यस्थ दर्शन [सह-आस्तित्व वाद] है।

① दर्शन चार भागो में है :-
① मानव व्यवहार दर्शन
② मानव कर्म दर्शन
③ मानव अभ्यास दर्शन
④ मानव अनुभव दर्शन

⟶

② सह आस्तित्व वादी विचार :-
① समाधानात्मक भौतिकवाद
② व्यवहारात्मक जनवाद
③ अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

③ मानव व्यवहार वादी शास्त्र :-
① आवर्तनशील अर्थशास्त्र
② व्यवहारवादी समाजशास्त्र
③ मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शास्त्र

④ योजनायें तीन स्वरुप में है :-
① जीवन विद्या योजना
② शिक्षा की मानवीयकरण योजना
③ परिवार मूलक स्वराज्य योजना

इसमें से शिक्षा के मानवीयकरण कार्य को हम कैसे सम्पन्न कर रहे है उसकी एक झलक आगे वर्णित है :-
① कक्षा 1 से कक्षा 12 तक पाठ्य क्रम
② चार वर्षीय बी० टेक० पाठ्यक्रम, मेडिकल पाठ्यक्रम, विज्ञान स्नातक, कला एवं साहित्य स्नातक।
इस प्रकार 16 वर्षीय शिक्षा की झलक प्रस्तुत है।

मेरे अर्जुन,

अभ्युदय स्मरण एवं नित्य उत्सव कामना!

कुछ दिन पहले आपसे मैंने पूरे देश के शिक्षा के मानवीयकरण के संदर्भ में प्रस्ताव किया था। उसमें आप अपनी सम्पूर्ण सम्मति व्यक्त किये थे। इसे चरितार्थ करने के क्रम में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली (I I T Delhi) में डा० यशपाल सत्य जी मुझसे विधिवत जीवन विद्या, अस्तित्व दर्शन और मानवीयता पूर्ण आचरण सम्बंधी सम्पूर्ण गहन तत्वों का अध्ययन किये हैं। इतना ही नहीं आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली में अनौपचारिक ढंग से जीवन विद्या को संस्था के मेधावी छात्रों को अध्ययन कराया और इसी जीवन विद्या प्रकाश में अनुसंधान कार्य का विस्तार कर रहे हैं। इस जीवन विद्या मूलक शिक्षा एवं अनुसंधान कार्य का लोकव्यापीकरण करने के लिये औपचारिक व्यवस्था की आवश्यकता है।

अतएव आप अपने सम्पूर्ण प्रभाव से इस कार्य को अन्तिम चरण में पहुँचाने

के लिये भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली में इसके लिये एक जीवन विद्या प्रकोष्ठ स्थापित करें जिसमें विज्ञान सम्मत विवेक एवं विवेक सम्मत विज्ञान विहित अध्ययन व्यवस्था हो।

मेरा पूर्ण विश्वास है और शुभाशीष है कि आप देश धरती के मानव को मानवीयता पूर्ण शिक्षा सहज सुलभ होने के प्रमाण को स्थापित कर पायेंगे।

आपका

नागराज

ए नागराज, प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

www.madhyasth.org

विश्व विद्या पीठ

विश्व विद्या :- सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति सहज सहअस्तित्व रुपी अध्ययन, अवधारणा, प्रामाणिकता, बोध पूर्ण विचार, व्यवहार और कार्यों को सर्व सुलभ करना, कराना व करने के लिये सम्मति देना।

पीठ :- विश्व विद्या सुलभ स्थली

विश्व विद्या की मूल अवधारणा

1. आस्तित्व नित्य वर्तमान है।
2. आस्तित्व ही सहअस्तित्व है।
3. आस्तित्व न घटती है न बढ़ती है।
4. आस्तित्व सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति है।
5. आस्तित्व में प्रत्येक एक अपने त्व सहित व्यवस्था है, समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना प्रमाणित है।
6. आस्तित्व में पूरकता नियम है।
7. आस्तित्व में उदात्तीकरण नियम है।
8. आस्तित्व में विकास नियम है।
9. आस्तित्व में संक्रमण नियम है।
10. आस्तित्व में जागृति नियम है।

11. आस्तित्व में बल और शक्ति का अविभाज्य नियम है।
12. आस्तित्व में जड़ चैतन्य प्रकृति नित्य वर्तमान है।
13. चैतन्य प्रकृति का प्रमाण प्रत्येक मनुष्य प्रमाणित होता है।
14. आस्तित्व में मनुष्य भी जड़-चैतन्य प्रकृति का संयुक्त साकार स्वरुप है।
15. आस्तित्व में मनुष्य ही जीवन जागृति का प्रमाण प्रस्तुत करता है।
16. मानव दृष्टा पद में है।
17. मानव सुख धर्मी है।
18. आस्तित्व में मानव ही अपनी जागृति सहज रुप न्याय धर्म सत्य को प्रमाणीत करता है।

    न्याय = अखंड सामाजिकता सहज सूत्रता

    धर्म = सार्व भौम व्यवस्था = सर्वतोमुखी समाधान = सुख

    सत्य = जीवन ज्ञान, आस्तित्व दर्शन, मानवीयता पूर्ण आचरण सहज प्रामाणिकता की अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन।
19. आस्तित्व सम्पूर्ण भाव है।

लक्ष्य

① अखण्ड समाज

② सार्वभौम व्यवस्था

प्रयोजन

समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व मानव मे से के लिये सुलभ करना, सुलभ कराना, एवं सुलभ करने के लिये सम्मति देना।

सम्मति = पूर्णता के अर्थ मे बौद्धिक सहयोग

सम्भावना

परम सत्य रूपी अस्तित्व सहज सहअस्तित्व मे से के लिये विकास (गठन पूर्णता), जागृति (क्रिया पूर्णता), अखंड सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाणीकरण, प्रामाणिकता (आचरण पूर्णता) सहज रुप मे प्रमाणित होना नित्य समीचीन है।

सम्भवना = पूर्णता के अर्थ में समीचीन भाव

घोषणा

ऊपर इंगित किये गये सम्पूर्ण तथ्यों और सम्भावनाओं को प्रमाणित करने के लिये हम अपने में अर्हता की घोषणा करते हैं।

घोषणा की पुष्टि में विश्वास दिलाना चाहते हैं कि इस विश्व विद्या पीठ के प्रेरक एवं प्रवर्तक गण अस्तित्व दर्शन, जीवन ज्ञान एवं मानवीयता पूर्ण आचरण में प्रमाणित है, एवं प्रमाणित करने के लिये (लोक व्यापीकरण करने के लिये) आवश्यकीय सभी प्रकार के सूत्रो से सम्पन्न हैं।

प्रेरक प्रवर्तको की सूची इस प्रकार है:-

प्रवर्तक — श्री ए० नागराज, प्रणेता मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्व वाद)

पारंगत —

विश्व विद्या पीठ

चतुर्थवर्षीय पाठ्यक्रम [स्नातक]

छात्रों की संख्या = 30 [एक कक्षा में]
आवासीय व्यवस्था =
प्रवेश - 12वीं - 4 वर्ष के लिये
डिप्लोमाधारक - 3 वर्ष के लिये

खपत
① परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य आधारित अखंड सामाजिक व्यवस्था की स्थापना हेतु
② गैर सरकारी स्वैच्छिक संस्थाएँ
③ सहकारी आन्दोलन [कोआपरेटिव]
④ सरकारी सेवा
⑤ ग्रामोद्योग तथा ग्रामीण व्यवसाय, शिल्प आदि स्वावलम्बी कार्य

व्यवसाय मे स्वावलम्बी तथा व्यवहार में सामाजिक स्नातक जो नौकरी, शोषण तथा विवशता से मुक्त होकर समृद्ध तथा न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिये उत्साही हों। ऐसी व्यवस्था की प्रतिष्ठा के लिये इन स्नातकों में

बौद्धिक समाधान होना अनिवार्य है। इसके लिये परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य योजना की अवधारणा स्पष्ट होनी चाहिये।

परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य की अवधारणा

प्रत्येक परिवार के लिये
① उत्पादन सुलभता } भौतिक समृद्धि
② विनिमय सुलभता }
③ न्याय सुलभता → अभय तथा सह अस्तित्व

स्वावलम्बन = नौकरी की मानसिकता से मुक्त एवं शोषण से मुक्त

इसकी निरन्तरता के लिये विचार में समाधानित = विवशता से मुक्त

विचारणीय बिन्दु

सुख के गहरे आयाम सुख, शान्ति, सन्तोष, आनन्द जीवन लक्ष्य है, समृद्धि समाधान सहअस्तित्व अभय समाज लक्ष्य है। ये दो बिन्दु जीवन लक्ष्य एवं समाज लक्ष्य सार्वभौम, शुभ है। इन दो ध्रुवो के बीच विवेक सम्मत विज्ञान की दिशा सुनिश्चित है जो विकास विधि और व्यवहार प्रमाण से अध्ययन गम्य है। इस अध्ययन के दो आयाम है :—

(1) जीवन विद्या और (2) वस्तु विद्या

जीवन विद्या अर्थात जीवन का स्वरूप, लक्ष्य एवं जीवन जागृति के कार्यक्रम का अध्ययन। वस्तु विद्या अर्थात जीवन विद्या की रोशनी में आस्तित्व समग्र का अध्ययन जिससे प्रत्येक वस्तु की पूरकता, उदात्तीकरण तथा प्रयोजनो को समझा जा सके। ऐसा अध्ययन विकास विधि से [illegible] जाता है तथा व्यवहार में

प्रमाणित होता है। इसके आधार पर विवेक सम्मत विज्ञान मूलक आवर्तनशील प्रौद्योगिकी का उदय होता है जो व्यक्ति में सुख शान्ति सन्तोष आनन्द तथा समाज में समृद्धि समाधान अभय तथा सहअस्तित्व की निरन्तरता बनाए रखती है। इससे प्रत्येक मनुष्य को वर्तमान में विश्वास तथा भविष्य में आश्वासन प्राप्त होता है। यही मानवीय व्यवस्था है।

मानवीय व्यवस्था में प्रत्येक परिवार को उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता तथा न्याय सुलभता प्राप्त होती है। उत्पादन सुलभता अर्थात उत्पादन का सहज अवसर। विनिमय सुलभता परिवार द्वारा उत्पादित वस्तुओ का श्रम मूल्य के आधार पर अन्य परिवारो के साथ लाभ-हानि मुक्त आदान प्रदान का सहज अवसर।

न्याय सुलभता अर्थात मानवीय सम्बंधो में विहित मूल्यो की पहचान तथा उसके निर्वाह का सहज अवसर। इसी के साथ मनुष्येतर जगत में आवर्तनशील सन्तुलन बना रहता है।

उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता, न्याय सुलभता

तथा आवर्तनशील प्राकृतिक सन्तुलन स्वराज्य के अभिन्न आयाम है। यही परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था है।

मानवीय शिक्षा व्यवस्था द्वारा परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य की स्थापना के लिये युवा पीढ़ी को तैयार करना है, प्रत्येक युवक को व्यवसाय में स्वावलम्बी, व्यवहार में सामाजिक और विचार में समाधानित करना इसका लक्ष्य है।

पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम को दो भागो में बाँटा जा सकता है! –
(क) अनिवार्य विषय (ख) वैकल्पित विषय

(क) अनिवार्य विषय

① परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य की स्पष्ट अवधारणा ताकि उसके प्रति निष्ठा तथा प्रतिबद्धता उत्पन्न हो सके।

② जीवनविद्या – जीवन के स्वरुप, लक्ष्य तथा जीवन जागृति के लिये कार्यक्रम।
– स्वतंत्रता तथा स्वराज्य की अवधारणा
– कल्पना शीलता कर्मस्वतंत्रता का तृप्ति बिन्दु

③ जीवन विद्या के प्रकाश में वस्तु विद्या –
– विवेक सम्मत विज्ञान की अवधारणा
– अस्तित्व समग्र को जानना मानना एवं पहचानना
– अस्तित्व में विकास
– अस्तित्व में जीवन तथा जीवन जागृति

④ मानवीय व्यवसाय – विवेक सम्मत विज्ञान मूलक आवर्तनशील प्रौद्योगिकी की स्पष्ट अवधारणा।

D528 1994 I [A] विश्व विद्यापीठ_split_1_c (1985-1995)

⑤ भाषा तथा अभिव्यक्ति – सम्प्रेषणा की विभिन्न विधायें।

⑥ गणित – वैदिक से कम्प्यूटर सहित समस्त गणितीय भाषा।

⑦ पर्यावरण – प्राकृतिक सन्तुलन एवं आवर्तनशीलता, पूरकता, उदात्तीकरण।

⑧ भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी इतिहास

⑨ भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्राणी विज्ञान, शरीर विज्ञान।

(ख) वैकल्पिक विषय

सभी छात्रों को व्यवसाय में स्वावलम्बी बनाने हेतु विभिन्न प्रकार के उद्योग, व्यवसाय व विनिमय सम्बंधी प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम – दो या तीन धारायें –

अनिवार्य तथा वैकल्पिक विषयों का ताना-बाना आठों सत्रों में बुना जायेगा। साथ ग्रामीण रहन सहन के अनुभव, स्वैच्छिक संस्थाओं के साथ अनुभव तथा उद्योगों एवं व्यवसाय के अनुभव तथा ग्रामीण कारीगरों के साथ प्रशिक्षण भी सम्मिलित होंगे।

चतुर्थ वर्षीय पाठ्यक्रम [स्नातक]

इस पाठ्यक्रम के परस्पर पूरक दो आयाम है –

① परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य के लिये सार्थक प्रौद्योगिकी, व्यवहार – व्यवस्था का अध्ययन

② स्नातकों का पूर्ण जागृतिकरण

इसकी सफलता के लिये इन अनिवार्यताओं को पहचाना गया है कि –

③ परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था की अवधारणा स्पष्ट हो,

④ तदर्थ मानवीयता पूर्ण व्यवस्था में भागीदारी सार्थक प्रौद्योगिकी कर्माभ्यास सहित प्रबन्ध हो।

⑤ मानवीयकरण की सुनिश्चित योजना प्राप्त हो।

⑥ पूरकता विधि से साधन सुलभ हो।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम निम्नलिखित आधार पर तैयार किया गया है :–

(अ) जीवन विद्या, अस्तित्व दर्शन एवं मानवीयता पूर्ण आचरण से मानवीयकरण (जागृतिकरण) सफल होता है।

(ब) जीवन विद्या, अस्तित्व दर्शन के प्रकाश में समाज गति के अर्थ में सार्थक प्रौद्योगिकी [illegible] होता है।

ए नागराज, प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) www.madhyasth.org

(द) शिक्षा का मानवीयकरण योजना, जीवन विद्या योजना और परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना उपलब्ध है।

(ध) विश्व विद्या पीठ सार्थकता को प्रमाणित करने के लिये कटिबद्ध है।

शक्ति सन्तुलन और पर्यावरण

- शरीर रूपी जड़ शक्ति, जीवन रूपी चैतन्य शक्ति।
- मनुष्य और जीव प्रकृति में सन्तुलन [पूरकता विधि से]
- मनुष्य, जीव प्रकृति और वनस्पति जगत के साथ संतुलन (पूरकता विधि से)
- मनुष्य, जीव प्रकृति, वनस्पति और खनिज वस्तुओ के साथ पूरकता विधि से संतुलन, पूरकता व नियंत्रण
- धरती, जल, वायु और जंगल में संतुलन पूरकता विधि से
- सन्तुलन में आवर्तनशीलता और व्यवस्था है।
- सन्तुलन में मानव का योगदान।
- मानव में सन्तुलन का आधार न्याय और समाधान।
- न्याय और समाधान का आधार आस्तित्वदर्शन जीवन ज्ञान
- मनुष्य की परिभाषा
- प्रत्येक इकाई अपने त्व सहित व्यवस्था है।
- संतुलन स्वयं में व्यवस्था और उसकी सार्वभौमता।
- मनुष्य शरीर और जीवन का संतुलन रूप।
- जीवन का स्वरूप
- सह आस्तित्व में विकास
- आस्तित्व स्वयं सहआस्तित्व

- आस्तित्व का स्वरुप
- उपसंहार :- आस्तित्व में सम्पूर्ण वस्तु सहअस्तित्व के प्रभाव क्षेत्र में संतुलित होने की व्यवस्था ।
- पर्यावरण प्रदूषण का कारक भ्रमित मनुष्य ।
- प्रदूषण के लिये प्रवर्तन, आवेश कारकता
- मानवीयता पूर्ण आचरण उत्पादन, विनिमय द्वारा प्रदूषण का निराकरण ।
- मानवीयता पूर्ण पद्धति से जीने की कला उसका स्वरुप
- स्वराज्य और स्वतंत्रता की योजना
- समाज न्याय और प्रौद्योगिकी का तालमेल का स्वरुप एवं प्रयोग विधि [गाँव का सर्वेक्षण]
- समाज मूल्यो की पहचान और निर्वाह करने की प्रौद्योगिकी का संगीतीकरण एवं उसकी निरन्तर कार्य विधि और संतुलन प्रणाली ।
- ग्राम समाज रचना में मानव मूल्य और व्यवसाय मूल्यो का तालमेल
- परिवार और गाँव में सहायक प्रौद्योगिकी
- नैसर्गिक न्याय, पर्यावरण, रसायनिक खाद से होने वाले विपरीत प्रभाव और उससे होने

के उपाय और प्रौद्योगिकी ।
- ग्राम-समाज [ग्रामवासियो] के परस्पर सहयोग से होने वाली
- न्याय प्रद्धति और प्रौद्योगिकी की पूरकता
- परस्पर विश्वास के आधार पर और न्याय के आधार पर सम्पन्न होने योग्य प्रौद्योगिकी जिसमें स्थानीय संभावनाओ के आधार पर स्पष्ट रुपरेखा का आँकलन ।
- व्यवस्था, प्रौद्योगिकी और परिवार में अन्तर्सम्बन्ध इनमे सामरस्यता का प्रमाणीकरण विधि ।
- न्यायिक विधि से प्रौद्योगिकी सम्पन्न संभावनाओ को पहचानना ।
- न्याय की कसौटी में संचार, उत्पादन, विनिमय इसकी सहज सुलभता की रुप रेखा । उसके अनुरुप प्रौद्योगिकी की कार्य योजना ।
- सहअस्तित्व में अखंड समाज व्यवस्था ।
- अखंड समाज की परिभाषा एवं स्वरुप
- सहअस्तित्व का सहज नित्य प्रभावक स्वरुप
- व्यवस्था, योजना व स्वरुप
- मनुष्य और सहअस्तित्व का अन्तर सम्बन्ध और प्रयोजन

- परिवार में मूल्य और व्यवस्था का प्रमाण
- परिवार में सम्बन्धो और उसके प्रयोजनो का अध्ययन ।
- व्यवस्था की विशालता और सहअस्तित्व में व्यवस्था का अध्ययन ।
- स्वराज्य व्यवस्था और प्रौद्योगिकी का अन्तर सम्बन्ध
- प्रौद्योगिकी की आवश्यकता, उपयोगिता, सदुपयोगिता एवं प्रयोजनीयता ।
- समाज व्यवस्था में भागीदारी उसका प्रयोजन
- मानव जाति का आधार
- मानव धर्म का आधार
- सहअस्तित्व में जीवन का अध्ययन और कार्य
- जीवन का स्वरुप उसकी महिमा और जागृति का प्रमाण ।
- जागृति पूर्वक व्यवस्था में भागीदारी
- जागृति की आवश्यकता और प्रयोजनीयता
- स्वराज्य व्यवस्था की कार्य योजना
- स्वराज्य व्यवस्था की निश्चित योजना ।

चतुर्थ वर्षीय पाठ्यक्रम [स्नातक]

भूमिका

व्यक्ति में समाधान, परिवार में समाधान समृद्धि, समाज (राष्ट्र) में समाधान समृद्धि अभय एवं विश्व (अन्तर्राष्ट्रीय स्तर) में समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व । सार्वभौम शुभ के अविभाज्य परिप्रेक्ष्य - आयाम हैं । यही सार्वभौम शुभ विश्व शान्ति का स्रोत है । जिस प्रकार की व्यवस्था में यह सर्व सुलभ हो उसे मानवीय व्यवस्था कहा है । उस मे मानव का सर्वतोमुखी विकास सहज सुलभ होगा ।

मानवीय व्यवस्था विश्व मानव की चिराकाँक्षा रही है । उसकी स्थापना के लिये निरन्तर प्रयास जारी रहा है । और सफलता मिलने तक रहेगा । क्योंकि अव्यवस्था की पीड़ा से मुक्त होना अनिवार्य है।

मानवीयता का धारक वाहक स्वयं मनुष्य है तथा मानवीय व्यवस्था की मूल इकाई परिवार है परिवार में मनुष्य के आचरण को प्रमाणित करने का अवसर होता है । मानवीय न्याय तथा मानवीय

व्यवसाय परिवार मे ही परिभाषित होता है। परिवार व्यवस्था को व्यक्त और प्रमाणित होने के लिये ग्राम व्यवस्था की आवश्यकता होती है। अनेक परिवारो की सम्मिलित व्यवस्था जिसमे प्रत्येक परिवार को न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता तथा विनिमय सुलभता सहज हो जाती है ग्राम परिवार व्यवस्था कहलाती है। स्वराज्य व्यवस्था में मानव स्वतंत्रता को भी अभिव्यक्त कर पाता है। उसकी कल्पनाशीलता और कर्म स्वतंत्रता तृप्त हो सकती है। नैसर्गिक आवर्तनशील सन्तुलन भी परिवार मूलक स्वराज्य में संभव हो सकता है। उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता, न्याय सुलभता तथा आवर्तनशील नैसर्गिक सन्तुलन का अविभाज्य और उसकी निरन्तरता स्वराज्य का वैभव है। यही परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था है तथा अखंड विश्व सामाजिकता का मूल रुप है।

मानवीय शिक्षा व्यवस्था द्वारा परिवार मूलक स्वराज्य की स्थापना के लिये

युवा पीढ़ी को तैयार करना है। प्रत्येक परिवार को व्यवसाय में स्वावलम्बी तथा व्यवहार में सामाजिक बनाने के लिये प्रत्येक युवा को विचार में समाधानित करना इसका लक्ष्य है।

जीवन विद्या

आस्तित्व में जीवन ही चैतन्य इकाई है जो पाँच अक्षय बलो और पाँच अक्षय शक्तियों का अविभाज्य वर्तमान है। जीवन ही आस्तित्व समग्र का दृष्टा है। जीवन ही स्वयं जीवन का दृष्टा है। जीवन ही स्वयं मे से के लिये जागृत हो उठता है। मानव परम्परा मे ही जीवन जागृति की संभावना कल्पनाशीलता एवं कर्मस्वतंत्रता के आधार पर समीचीन है। अतः मनुष्य ही जीवन का अध्ययन कर पाता है। यही जीवन विद्या है। जीवन विद्या से जीवन जागृति होती है। इससे मानवीयता पूर्ण व्यवस्था एवं अखंड सामाजिकता की समझ बनती है, स्वतंत्रता का अनुभव होता है। जिसकी प्रामाणिकता के लिये स्वराज्य अभियान में भागीदारी की योग्यता आ जाती है।

जीवन जागृति के अभाव में मनुष्य प्रियाप्रिय (इन्द्रिय सापेक्ष), हिताहित (शरीर सापेक्ष) तथा लाभालाभ (वस्तु सापेक्ष) दृष्टियों से ही कार्य कर पाता है। उसका सम्पूर्ण कार्य रूप दीनता (अभाव व अक्षमता), हीनता (विश्वास घात) तथा क्रूरता (परधन, परनारी / पर पुरुष, पर पीड़ा) सहित लाभोन्माद, कामोन्माद व भोगोन्माद के रूप में प्रकट होता है वह भय और प्रलोभन से त्रस्त रहता है क्योंकि इससे आवेश और पीड़ा उत्पन्न होती है। मनुष्य पीड़ाओं को वरता नहीं है। पीड़ा मुक्ति के लिये व्यवस्था चाहता है। व्यवस्था उसकी स्वभाव गति में सहज ही उद्गमित होती है।

जीवन जागृति क्रम मे न्याय, समाधान (धर्म) एवं प्रामाणिकता की दृष्टि क्रियाशील हो उठती है। इससे मनुष्य में धीरता वीरता उदारता सहित दया कृपा करुणा का उदय होता है। उसे मानव सम्बंधो व नैसर्गिक सम्बंधो की पहचान हो जाती है। जिसके निर्वाह करने के क्रम में वह व्यवहार में सामाजिक

हो उठता है। सामाजिकता की पुष्टि परिवार में होती है। मानवीयता पूर्ण परिवार व्यवस्था का प्रथम ध्रुव है। परिवार गति [समाज गति] के लिये समस्त परिवार को मानवता पूर्ण व्यवसाय [उत्पादन तथा विनिमय सुलभता] की आवश्यकता पड़ती है यहीं से परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था का उदय होता है। ग्राम स्वराज्य में ही न्याय सुरक्षा भी प्रमाणित होता है। ग्राम स्वराज्य व्यवस्था अखंड विश्व स्वराज्य व सामाजिकता का मूल रूप है। मानवीय संस्कृति, मानवीय सभ्यता तथा मानवीय विधि उसके विभिन्न आयाम है जो अविभाज्य हैं।

जीवन विद्या के प्रकाश में सम्बंधों व उसमें निहित मूल्यों की पहचान, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था तथा अखंड विश्व सामाजिकता की अवधारणा स्पष्ट हो जाती है। जीवन जागृति क्रम में विवेक सम्मत विज्ञान व विज्ञान सम्मत विवेक पूर्ण मनुष्य सहज ही हो जाता है, तथा सार्थक प्रौद्योगिकी का अध्ययन सुगम हो जाता है।

मानवीयता पूर्ण परिवार :—

दृष्टा पद प्रतिष्ठा

जीवन विद्या के अध्ययन से मानव जीवन के विभिन्न आयामो में होने वाले अन्तर्विरोधो का निराकरण होने लगता है। वृत्ति विचार पूर्वक मन का मूल्यॉंकन करती है और मन वृत्ति का अनुभव कर उसके प्रति समर्पित हो जाती है। चयन का आधार अब प्रिय-हित लाभ की दृष्टि न होकर न्याय की दृष्टि हो जाती है। यह मन और वृत्ति के अन्तर्विरोध का निराकरण है यही दोनो के बीच साम्यरसता है जो सुख के रुप में पहचानी जाती है। जीवन जागृति क्रम के दूसरे सोपान में वृति में होने वाले विचारो का मूल्यांकन, चिन्तन द्वारा चित्त प्रयोजनो के आधार पर करता है। प्रयोजन

बिन्दु विभिन्न परस्परता के सन्तुलन बिन्दु हैं। वृत्ति अब चित्त का अनुभव करती है और प्रयोजनो के आधार पर हुए चिन्तन के प्रति समर्पित हो जाती है। यहीं समाधान के उदय की संभावना होती है। विवेक सम्मत विज्ञान तथा विज्ञान सम्मत विवेक की संभावना भी यही बनती है। चित्त और वृत्ति के बीच यह साम्यरसता शान्ति के रुप में पहचानी जाती है।

जीवन जागृति के तीसरे सोपान में प्रयोजन की तात्विकता तथा वैभव प्रसवित होते हैं। विवेक से परिमार्जित प्रयोजन के तृप्ति बिन्दु का मूल्यॉंकन बुद्धि द्वारा होता है। यही अवधारणा है। अवधारणा के उपरान्त ही समाधान संकल्प पूर्वक प्रसवित होता है इससे चित्त बुद्धि का अनुभव करता हुआ उससे साम्यरस हो जाता है। इसे सन्तोष के रुप में पहचाना जाता है। समाधान ही मानव धर्म है। समाधानित मानव प्रेरणा का स्रोत बन जाता है तथा मानवीयता पूर्ण व्यवस्था के लिये समर्पित एवं संकल्पित होता है। ऐसा मानव श्रेष्ठ शिक्षक पद के योग्य होता है।

विद्यार्थियो को समाधानित करना ही उसका एक मात्र कार्यक्रम होता है।

चतुर्थ सोपान में अनुभव और प्रामाणिकता वैभव के रुप में मिलते है। इसमें सम्पूर्ण समाधानो को निरन्तर अनुभव की कसौटियों में कस कर प्रमाणित किया जाता है। यह जीवन की सर्वोच्च कोटि की उपलब्धि है। इसी को मनुष्य को सम्पूर्ण आयाम कोण और दिशा के परिप्रेक्ष्य में संतुलित रहने का स्रोत निर्झरणी के रुप में प्राप्त होता है। ऐसी अर्हता से सम्पन्न होना प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य है। जो जीवन विद्या पूर्वक ही सहज है। यही दृष्टा पद प्रतिष्ठा है।

शिक्षा

शिक्षा के सम्पूर्ण वस्तुएँ :- अस्तित्व समग्र है जिसमें :-

1. अस्तित्व में सहअस्तित्व
2. सहअस्तित्व में विकास

3. विकास क्रम में जीवन व जीवनीक्रम
4. जीवन सहज
5. रासायनिक एवं भौतिक संरचना-विरचना।

प्रत्येक विद्यार्थी को इस समग्र शिक्षा वस्तु का अध्ययन इस प्रकार करवाना है कि वह मानव में निहित अमानवीयता का निराकरण कर सके। मानवीयता की महिमा को समझ सके तथा विवेक पूर्ण अभ्यास द्वारा मानवीयता में संक्रमित हो सके। किसी विद्या विशेष में उसे पारंगत बना कर अभियान में भागीदारी के योग्य भी बनाना है।

ये स्नातक मानवीयता पूर्ण व्यवस्था के धारक वाहक होंगें। वे अपने व्यक्तित्व प्रामाणिकता तथा प्रतिभा के धनी होंगें। मानवीयता की स्थापना संरक्षण एवं संवर्धन के लिये समर्पित होंगें। वे प्रेरणा के स्रोत व श्रद्धा का केन्द्र बनेंगें।

→

तकनीकी सहित मानवीय शिक्षा

जीवन विद्या के प्रकाश में आस्तित्व दर्शन विधि से भौतिक रासायनिक रचना विरचना का विशेष अध्ययन करने से प्राकृतिक व नैसर्गिक नियम, विवेक सम्मत विज्ञान व प्रौद्योगिकी तथा मानवीयता पूर्ण उत्पादन के लिये आवश्यक निपुणता व कुशलता प्राप्त की जाती है। इस पाठ्य क्रम का यही लक्ष्य है। प्रत्येक स्नातक अपने अपने परिवार को मानवीयता पूर्ण व्यवहार में सामाजिक तथा व्यवसाय में स्वावलम्बी बनाकर स्वराज्य अभियान में भागीदारी का निर्वाह करेंगे। ग्रामीण व क्षेत्रीय स्तर पर भी लघु उद्योगों एवं वृहत उद्योगों का संयोजन करेंगें तथा राष्ट्र एवं विश्व स्तर पर अखंड सामाजिकता का मार्ग प्रशस्त करेंगें।

कार्य आरम्भ करने के लिये प्रस्तुत पाठ्यक्रम तैयार किया गया है आशा है कि विद्वतजन जीवन विद्या आस्तित्व दर्शन को ध्यान में रखते हुए इस पर विचार पूर्वक टिप्पणी

करेंगें तथा अपना सुझाव देंगें। इन सुझावों के आधार पर इस खाके को और समृद्ध बना दिया जायेगा। विद्वान शिक्षक प्रारम्भ में इसका उपयोग कर सकते हैं तथा कालान्तर में अपने अनुभव के आधार पर उसका परिवर्धन करते रहेंगें।

विवेक सम्मत तकनीकी पाठ्यक्रम (विज्ञान)

सत्र - 1

① आवश्यकता से अधिक उत्पादनशील मानव एवं परिवार में सार्थक प्रौद्योगिकी का परिचय व लक्ष्य :-

विद्यार्थियों में परिवार में समाधान व समृद्धि तदर्थ मानवीय प्रौद्योगिकी के प्रति विश्वास उत्साह एवं निष्ठा उत्पन्न करना है ताकि वे सम्पूर्ण चतुर्थ वर्षीय पाठ्य क्रम की उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता को भली प्रकार से समझने और निर्वाह करने के लिये समुचित अध्ययन कार्य कर्तव्य और दायित्व के प्रति कर्तव्य और जागृत व समर्पित हो सके।

प्रौद्योगिकी की आवश्यकता, उसका सार्थक रूप तथा मर्यादा, मानव सहज सामान्याकाँक्षा [आहार, औषधि, आवास, आवासीय साधन, अलंकार, व प्रसाधन सम्बन्धी वस्तुयें व उपकरण] महत्वाकाँक्षा [दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन सम्बंधी वस्तु व उपकरण] के रूप में आवश्यक कार्य स्पष्ट होते है। इस क्रम में नैसर्गिक सम्बंध तथा उसके सन्तुलन को बनाए रखने का समुचित अध्ययन करेंगे। उत्पादनशील मानव सहज रूप में श्रम शक्ति व प्राकृतिक ऐश्वर्य के संयोजन से उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य को प्रमाणित करता है।

मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता का आशावादी होने, सार्वभौमता का अध्ययन कराने का प्रावधान है। दृष्टापद प्रतिष्ठा, मनुष्येतर जगत का अन्तर्सम्बंध, जीवन और शरीर का अंतर सम्बन्ध, पूरकता, विकास सहअस्तित्व, नैसर्गिक तथा मानव सम्बंध, आवश्यकता से अधिक उत्पादन नियम, रासायनिक भौतिक रचना विरचना नियम, न्याय, समाधान, प्रामाणिकता व प्रमाणों को समझने और निर्वाह करने

का अध्ययन किया जाएगा। इसके फल स्वरूप दयापूर्ण कार्य व्यवहार सुलभ होने का अध्ययन।

(2) सर्वेक्षण

विभिन्न आयामो में सर्वेक्षण कला को सिखाना तथा स्थानीय और क्षेत्रीय देश व्यापी सर्वेक्षण द्वारा उसका अभ्यास कराना। मानचित्र बनाना। क्षेत्रीय प्राकृतिक सौन्दर्य एवं संसाधनो का सर्वेक्षण करना। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृतिक सम्पदा क्षेत्रीय संदर्भो में सामान्याकाँक्षाओं एवं महत्वाकाँक्षाओं का स्वरूप विभिन्न व्यवसायो का सर्वेक्षण, क्षेत्रीय उत्पादकों से सम्पर्क, समस्या एवं संभावनाओं का आँकलन व अध्ययन सम्पन्न कराना।

(3) गणित-1 :- वैदिक गणित और सार्थक सभी प्रकार प्रकार के गणित का आस्तित्व सहज वस्तुनिष्ठ विधि से सम्पन्न करेंगें।

④ अभिव्यक्ति-1 :—

"मानव बहुआयामी व्यक्तित्व है"
इसलिये जागृति क्रम मे उत्पादन समृद्धि
नियम सौंदर्य बोध व प्रयोजनीयता का
व्यवहार संचेतना, न्याय सौंदर्य, मानवीयता
पूर्ण समाज व्यवस्था न्याय समाधान सौंदर्य,
स्वानुशासन-स्वतंत्रता, न्याय, समाधान,
व मानवीयता पूर्ण सौंदर्य, सहअस्तित्व प्रमाण
सौंदर्य, मानवीयता पूर्ण आचरण नियम सौंदर्य,
आवर्तनशील अर्थ चिन्तन कार्य सौन्दर्य,
स्वास्थ्य-संयम परम्परा नीति सौन्दर्य,
मानवीय शिक्षा-संस्कार कार्य व्यवस्था नीति सौंदर्य
व्यक्तित्व प्रतिभा में पूरक सिद्धान्त कार्य सौन्दर्य,
आयोजन व्यवस्था कार्य सौन्दर्यो का हिन्दी व
अँग्रेजी भाषाओ मे व्यवहारिक उपयोग, अध्ययन,
चर्चा, संवाद, अभ्यास। उक्त अभिलाषाओ
के आधार पर लेखन, निबन्ध, साहित्य,
कविता, विज्ञापन चित्र, रेखाचित्र को व्यक्त
करने का अवसर।

⑤ सामान्य ज्ञान विज्ञान -1 :—

व्यवहार व व्यवस्था में जीने की
विधि, कला व दैनिक उपयोग की सामान्य
जानकारी, घरेलू, दफ्तरी तथा ग्रामीण उपकरणो
का रख रखाव एवं मरम्मत आदि।

⑥ मनुष्य :—

जड़ एवं चैतन्य का संयुक्त साकार रूप में
मनुष्य, शरीर का स्वरूप, कार्य, प्रयोजन, स्वभाव
एवं धर्म, चैतन्य जीवन का कार्य, स्वभाव, विषय
व दृष्टि, पाँच कोटि में सम्पूर्ण मानव की गणना
और विश्लेषण, विकास कार्यक्रम, जागृति पूर्णता,
ज्ञानावस्था, शरीर का नश्वरत्व एव जीवन का
अमरत्व।

सत्र - 2

① पदार्थावस्था :- परमाणु, अणु रचना के आधार पर भौतिक व रासायनिक वस्तुओ का स्वरुप, रुप, गुण का अध्ययन। स्वभाव व धर्म की पहचान, स्थानीय व क्षेत्रीय भौतिक सम्पदा के उपयोग, सदुपयोग एवं प्रयोजन की संभावनाएं, प्रचलित उत्पादन व्यवस्था का निरीक्षण, परीक्षण और सर्वेक्षण।

② सर्वेक्षण-2 :- क्षेत्रीय संस्कृति, सामाजिक व आर्थिक सर्वेक्षण, विश्व एवं राष्ट्रीय समाज उपयोगिता की संभावना, मर्यादा व संतुलन।

③ गणित-2 :- चलनकलन एवं अवकल समीकरण, गणनात्मक कला, अभिकलित का उपयोग करना।

④ अभियांत्रिकी-2 :- प्राविधिक तथा अभिकलित्र का उपयोग

⑤ सामान्य ज्ञान विज्ञान - 2 :-

⑥ जीवन विद्या-1 :- जीवन के अक्षय बलो एवं अक्षय शक्तियो की कार्यरुप में पहचान। संचेतना का कार्य रुप और उसकी प्रमाणीकरण विधि। जानना मानना पहचानना निर्वाह करना। प्रतिभा एवं व्यक्तित्व। अभ्यास एवं परीक्षण।

⑦ लक्ष्य = प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संगीतीकरण।

सत्र-3

① प्राणावस्था :- भौतिक वस्तुओ में स्वयं स्फूर्त रासायनिक प्रणाली प्रक्रिया, प्राण शक्ति एवं प्राण रचना सूत्र, पदार्थावस्था की पूरकता, अन्तर सम्बंध एवं आवर्तनशीलता, उर्वरता, पर्यावरण, जीवो का शरीर, मानव शरीर, प्राणियो के स्वभाव एवं धर्म, प्राकृतिक नियम एवं संतुलन सप्राण निष्प्राण कोशाओ का सटीक निरीक्षण, परीक्षण, एवं प्रयोगात्मक अध्ययन।

ए नागराज, प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
www.madhyasth.org

② यंत्रशाला :- टर्निंग, प्लेनिंग, ड्रिलिंग, शेपिंग, कास्टिंग, मोल्डिंग, पैटर्न मेकिंग, वेल्डिंग, ब्रेजिंग ।

③ जड़शक्ति :- खनिज शक्ति (कोयला, तेल, प्राकृतिक गैस) काष्ठ शक्ति । कृषि अवशेषो से प्राप्त शक्ति [गन्ने की खोई, पत्ती आदि] जल शक्ति प्रवाह, प्रपात एवं तरंग शक्ति । पवन शक्ति। प्रवाह शक्ति और पवन शक्ति को उपयोग करने की विधियाँ एवं प्रौद्योगिकी ।

④ व्यवसाय योजना :- । -

प्रथम दो सत्रों में क्षेत्रीय - संसाधनो, उद्योगो, आवश्यकताओ एवं सम्भावनाओ का सर्वेक्षण हो चुका है । इसके आधार पर उपयुक्त ग्रामोद्योगो की सूची बनाई जाये । इनमेसे प्रत्येक विद्यार्थी चार ग्रामोद्योग का चुनाव करे । आशा की जाती है कि शिक्षा के उपरान्त ये स्नातक अपने परिवार का आधार इनमे से किसी एक उद्योग को अपनायेगा । व्यवसाय योजना के अन्तर्गत इन उद्योगो का समुचित ज्ञान करा दिया

जायेगा । इसके लिये आवश्यकतानुसार पारम्परिक व्यवसायियो से सहायता ली जायेगी । प्रौद्योगिकी का समुचित अध्ययन किया जायेगा ।

⑤ परिवार व्यवस्था :-

परस्परता, पूरकता एवं सम्बंध, सामाजिक नियम, मूल्य, न्याय, व्यवसाय एवं सामाजिकता की इकाई परिवार, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य एवं व्यवसाय मूल्य । व्यवहाराभ्यास, सहपाठियो एवं शिक्षको की बीच सम्बंधो का निर्वाह अभ्यास, परिवार में निर्वाहाभ्यास, व्यवस्था, परिवारो की परस्परता । स्वधन, स्वपुरुष/स्वनारी और दया पूर्ण कार्यो का स्वरूप और प्रयोजन । परिवार में समृद्धि के लिये मानवीय आवश्यकता के अनुरूप व्यवसाय में भागीदारी ।

⑥ जीवन विद्या-2 :- अक्षय बल एवं अक्षय शक्ति रूपी दस क्रियाएँ, उनका अन्तर्सम्बंध प्रमाणित करने की विधि, दृष्टापद प्रतिष्ठा एवं उसके फल स्वरूप जीवन, शरीर, अस्तित्व, विकास और जागृति के दृष्टापद में मनुष्य की प्रामाणिकता ।

ए नागराज, प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

www.madhyasth.org

सत्र-4

① जीवावस्था :- शरीर और जीवन का संयुक्त साकार रूप। स्वभाव, विषय, एवं धर्म की पहचान। वनस्पतियों एवं जीवो की परस्पर पूरकता, जीवो में प्राकृतिक सन्तुलन। जीवो की उपयोगिता और प्रयोजनीयता। मनुष्य का दायित्व।

② जड़ शक्ति-2 :- गोबर गैस, कचरा गैस, सौर शक्ति, प्रकाश के स्रोत मिट्टी तेल, वनस्पति तेल, मोम, विद्युत, प्रकाश उपकरण एवं प्रकाश व्यवस्था।

③ यांत्रिकी-1 :- ठोस यांत्रिकी, काष्ठ, धातु एवं प्लास्टिक यंत्र, ठोस रचनाओं का निर्माण एवं स्थायित्व तथा रख रखाव।

④ व्यवहार योजना-2 :-

⑤ परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था :- बौद्धिक नियम, व्यवसाय सुलभता-विनिमय सुलभता तथा न्याय सुलभता, मानवीय व्यवस्था और उसकी निरन्तरता,

शिक्षा-संस्कार व्यवस्था, स्वास्थ्य-संयम व्यवस्था, स्वराज्य एवं स्वतंत्रता। क्षेत्रीय गाँवो की प्रचलित अवस्था, किसी एक गाँव का सर्वेक्षण और उसमें परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य की संभावना एवं कार्य योजना।

⑥ इलेक्ट्रॉनिकी एवं विद्युत प्रौद्योगिकी :- इलेक्ट्रॉनिकी उपकरणों तथा विद्युत का सामान्य व्यवहारिक ज्ञान, रख रखाव।

सत्र-5

① ग्राम संयोजन :- धूप वायु एवं वृक्षो का उपयोग, धरातल का संयोजन, आवास, पशु शाला एवं व्यवसायिक क्षेत्र, मार्ग, प्रकाश, सार्वजनिक स्थान तथा विद्यालय, धर्मशाला, क्रीड़ा स्थली, सभा स्थली, मेलो एवं उत्सवो की व्यवस्था।

② यांत्रिकी-2 :- धातु विज्ञान व प्रौद्योगिकी,

③ व्यवसाय योजना-3 :-

④ शरीर शक्ति का स्वरूप एवं चैतन्य शक्तियों की अक्षयता

शरीर व जीवन के संयुक्त रूप में श्रम । पशु एवं मानव श्रम, संभावना, नियम एवं मर्यादा, भार वाहन गाड़ी वाहन चलाना, हल, पशुओं का प्रशिक्षण, गन्ना एवं तेल पिराई चावल कुटाई, श्रम मूल्य, स्वास्थ्य रक्षा चैतन्य शक्तियाँ पांडित्य ।

⑤ आयोजन प्रौद्योगिकी :-

स्वराज्य एवं स्वतंत्रता व्यवस्था के लोकव्यापीकरण क्रम में आयोजनों को सम्पन्न करना । ऐसे आयोजनों में व्यवस्था अनिवार्य है। अभ्यागतों एवं अथितियों के लिए आवास, भोजन, पेयजल, स्वच्छता का सटीक प्रबंध । आवश्यकीय साधनों की पहचान, निर्माण विधियाँ, उत्पादन एवं उपयोग प्रक्रियाएँ । स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में भागीदारी ।

⑥ विश्व स्वराज्य व्यवस्था :-

विश्व स्वराज्य सभा का स्वरूप, लक्ष्य तथा अवधारणा, कार्यरूप, कर्तव्य और दायित्व, संभावना, कार्यक्रम ।

सत्र-6

① जल विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी :-

द्रव यांत्रिकी, जल का प्राकृतिक स्वरूप, स्थानीय जल एवं स्रोतों का परीक्षण, भूमिगत जल भंडार, नदी नाले नहर तालाब कूप, नल डीजल एवं विद्युत पम्प, पशु एवं मानव श्रम द्वारा जल विस्थापन, जल का उपयोग सदुपयोग एवं नियंत्रण, जल की स्वच्छता, वर्षा जल अति वृष्टि क्षेत्र, कम वर्षा वाले क्षेत्र, रेगिस्तान में जल व्यवस्था, जल संकट जल प्रदूषण जल की आवर्तनशीलता, जल संरक्षण, जल शोधन ।

② आवास योजना : 4 :-

③ आवास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी :-

आवास सामग्री, मनुष्यों एवं पशुओं के लिये आवास, सार्वजनिक भवन, व्यवसायी भवन, भवनों का रख रखाव एवं सुरक्षा, क्षेत्रीय आवास व्यवस्था का अध्ययन। मनुष्यों पशुओं वृक्षों की परस्पर नैसर्गिकता एवं उसकी सुरक्षा।

④ जल-मल एवं स्वच्छता प्रौद्योगिकी :-

मलकी आवर्तनशीलता, मल मूत्र का उपयोग, नियंत्रण, रोग निवारण, खाद प्रौद्योगिकी।

⑤ यांत्रिकी 2 :- विभिन्न प्रकार की भट्टियाँ, निर्माण एवं उपयोग।

⑥ अखंड सामाजिकता 1 :- मानवीयता पूर्ण संस्कृति का अध्ययन, सुसंस्कार, संस्कारों की आवश्यकता को मानवजाति एक मानवीयता पूर्ण व्यवस्था (धर्म) एक का

उपयोग एवं प्रयोजन। संस्कारों की अवधारणा, संस्कार विधि।

संस्कृति मानवीयता की अवधारणा, विधि, व्यवस्था और सभ्यता का अन्तर्सम्बंध।

सत्र-7

① विनिमय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी :-

विनिमय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रतीक मूल्य, श्रम-मूल्य, उपयोग वस्तुओं का भंडारण, सुरक्षा, वितरण व्यवस्था एवं प्रौद्योगिकी, स्वधन का पहचान एवं उसमें प्रतिबद्धता।

② व्यवसाय योजना 5 :-

③ आपतकालीन राहत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी :- प्राकृतिक एवं व्यवस्था सम्बंधी आपदाएँ, उसका निराकरण।

सूखा :- जल आपूर्ति के साधन, उनका निर्माण एवं उपयोग

बाढ :- जानमाल की सुरक्षा, जल मल का पूरक विधि से नियंत्रण प्रौद्योगिकी

भूकम्प :- भूकम्प के कारण, मनुष्य की भूमिका, भूकम्प पीड़ितो के लिये राहत सामग्री, भूकम्प क्षेत्रो की पहचान, भूकम्प क्षेत्रो में निर्माण कार्य की मर्यादा, ऐसे क्षेत्रो हलके पदार्थों से गृह निर्माण, बौने घर।

महामारी :- महामारी क्षेत्रो में राहत कार्य एवं सेवा।

तूफान :- तूफान प्रभावित क्षेत्र, बौने घर।

अग्नि :- अग्नि शामक यंत्र, जन शक्तियो का उपयोग, निर्माण कार्यो में अग्नि प्रकोप से बचने के लिये प्रबन्ध, मिट्टी पानी की समुचित व्यवस्था, खलिहान व खेतो में अग्नि कांड व दावानल को रोकने की विधियाँ।

हिंसा :- विस्फोटको की पहचान एवं उसका निरस्त्रीकरण।

आक्रमण :- रोकथाम के उपाय, रक्षा विज्ञान।

(4) प्रचलित भारतीय प्रशासनिक एव राजनीतिक ढाँचा

(5) यातायात संचार प्रौद्योगिकी :- रेडियो, टी॰ वी॰, टेली फोन, उपग्रह, राडार, मानवीय संचेतना, अखंड समाज, स्वराज्य एवं स्वतंत्रता का सहज संचार, साइकिल, स्वचालित वाहन, रेलगाड़ी, वायुयान का सदुपयोग एवं निर्माण कार्य।

(6) अखंड सामाजिकता :- मानवीय सभ्यता का अध्ययन, व्यवहारिक सम्बंधो व मूल्यो की विशालता की अवधारणा, व्यवस्था की सार्वभौम कार्य की अवधारणा, भागीदारी, सदुपयोग एवं प्रयोजन, छोटे व्यवसाय का सहअस्तित्व में निर्वाह, बड़े उद्योगो में भागीदारी, बड़े उद्योगो में व्यवस्था का स्वरूप तथा उसमें भागीदारी।

सत्र 8

① प्रचलित वित्तीय संस्थाएँ एवं कर व्यवस्था

② अखंड सामाजिकता-3 :— मानवीयता पूर्ण आचरण रुपी विधि एवं व्यवस्था का अध्ययन, संचेतना प्रणाली, मानवीय आचार रूपी संहिता रुपी संविधान तथा उसको सर्वसुलभ करना।

③ प्रकल्प :—

④ व्यवसाय योजना :—

⑤ मूल्यांकन :— उपयोग, सदुपयोग और प्रयोजनो का मूल्यांकन, मूल्यो का मूल्यांकन, प्रतिभा व व्यक्तित्व का सन्तुलन एवं उसका मूल्यांकन, व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलम्बी, परिवार का मूल्यांकन, सम्बंधो का मूल्यांकन, ग्राम मूल्य तथा

विनिमय मूल्य का मूल्यांकन।

परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में सार्थक प्रौद्योगिकी

- ग्राम शिल्प :- वस्त्र शिल्प, चर्म शिल्प, काष्ठ शिल्प, धातु शिल्प, मिट्टी शिल्प, वस्तु शिल्प, एवं मणि शिल्प।
- हस्तकला :- कढ़ाई, बुनाई, रंगाई, चित्रकला।
- कुटीर उद्योग :- साइकिल मोटर रेडियो टी.वी.की मरम्मत आदि सेवा कार्य, नाई, धोबी, प्रसाधन, संचार, गीत वाद्य, संगीत, कविता आदि सेवा।
- ग्रामोद्योग :- कृषि एवं कृषि उद्योग, पशु पालन, जल-व्यवस्था, शक्ति व्यवस्था, मार्ग-व्यवस्था दूर-संचार व्यवस्था, स्वास्थ्य व्यवस्था, पशु (बैल, अश्व, हाथी, गधा) का प्रशिक्षण।
- पर्यावरण एवं स्वच्छता :- जल स्वच्छता, वायु स्वच्छता, मार्ग स्वच्छता, आवास स्वच्छता, सार्वजनिक स्थानो की स्वच्छता, मल-जल व्यवस्था।

- आपात कालीन प्रौद्योगिकी :- सूचना, बाढ़, भूकम्प, तूफान, अग्नि, संक्रामक रोग, सुरक्षा ।
- यंत्र और उपकरण :- कोल्हू, भट्टियाँ, गाड़ियाँ, हल, चरखा, मोटर, करघा, रन्दा, बन्दनी, बर्मा, कुल्हाड़ी, बसूला, गंडासा, हंसियाँ, खुर्पी आदि ।
- विनिमय प्रौद्योगिकी :- भंडारण, पैकेजिंग, यातायात, प्रतीक मूल्य, श्रम मूल्य, की स्पष्ट अवधारणा, लाभ-हानि मुक्त विनिमय ।

अखंड सामाजिकता

- पंच मानव (मानवीय आचरण, व्यवहार, कार्य और व्यवस्था में प्रतिबद्धता)
- मनुष्य (शरीर और जीवन के कार्यों और स्वरूप की स्पष्ट अवधारणा)
- परिवार (मानवीय सम्बंध, व्यवसाय सम्बंध और नैसर्गिक सम्बंध, मानव में निहित मूल्य मूल्य की पहचान और निर्वाह) बौद्धिक

समाधान, भौतिक समृद्धि ।

- परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था अभियान समाधान, समृद्धि, अभय, सह्अस्तित्व ।
- मानवीय संस्कृति और मानवीय सभ्यता [अखंड सामाजिकता के अर्थ में]
- मानवीय विधि - मानवीय आचार संहिता [मनुष्य का आचरण, व्यवहार, व्यवस्था सूत्र से सूत्रित होना]

विश्व स्वराज्य व्यवस्था

[ग्राम स्वराज्य से विश्व स्वराज्य तक कार्य क्षेत्र और उनमें होने वाले कार्यक्रम की अवधारणा]

व्यवसाय योजना ।

पदार्थ में मृदा, पाषाण, मणि, धातुओं का अन्तर्सम्बंध और सन्तुलन ।

- मिट्टी से होने वाले उत्पादन - अन्न, वनस्पति, औषधि, वन ईंट, खपरैल, फर्श की आवश्यक सामग्री, बर्तन, मूर्ति, खिलौने, दैनिक उपयोगी सामग्री, सड़क सामग्री, औषधियाँ उपचार ।
- पत्थर से होने वाले उत्पादन :- मूर्ति, गृहनिर्माण सामग्री, तालाब, नहर, नदी में सीढ़ी अथवा

सुरक्षा सामग्री, सड़क के लिये सामग्री,
चूने के पत्थर से चूना उद्योग
संगमरमर से गृह स्थानो के अलंकरण रुप
में सामग्री ।

- मणि सम्बंधी उद्योग :- धरती में हीरा, पन्ना, पुष्पराग, माणिक्य, प्रवाल, चन्द्रमणि, नीलम, अकीक, इनसे सम्बन्धित मणियो कोयला कोरंडम, गार्नेट, ग्रेफाइट, सिलीकान, औषधियाँ उपचार ।
- धातु सम्बंधी उद्योग :- लोहा, सोना, ताँबा, सीसा, एल्मुनियम, जस्ता, राँगा, मिश्रित धातुएँ, तथा पीतल, कास्य, तथा और भी विभिन्न मिश्र धातुएँ । औषधियाँ तथा अन्य उपचार ।
- विकिरण स्रावी धातुएँ :- यूरेनियम, थोरियम, रेडियम, प्लूटिनियम आदि । उपचार ।
- सरल पदार्थ सम्बँधी उद्यम :- पानी, क्षार, अम्ल, तिक्त कटु कषाय मृदा इन रसो का उपयोग । रासायनिक औषधियाँ । इन

द्रव्यो का तात्विक स्वरुप, परमाणु अणु और
रचना प्रभेदो के रुप में । प्रौद्योगिकी एवं यांत्रिकी,
धातुओ के परमाणु, तल में अणु ।

- रस-द्रव्य :- वस्तुओ तरल विरल और ठोस रुप में पाया जाता है ।
- विरल पदार्थ सम्बंधी उद्यम :- प्राणवायु जो प्राणकोषा और उनसे रचित शरीरो के लिये पोषण के रुप में कार्य करता है । उसके संरक्षण कार्य के लिये व्यवसाय प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान ।
- अपानवायु :- जो प्राण के रुप में और उससे रचित शरीरो के लिये अग्राह्य है । वे प्राणकोषाएं जो वनस्पति औषधि अन्न के रुप में रचना प्रदान करते हैं उनमे से अधिकांश प्राणकोषा और उससे रचित रचनाएं अपान वायु को अपना आहार बना लेते हैं जो सहज है इसके लिये समुचित संरक्षण संवर्धन का स्वरुप ऐसी वनस्पतियों औषधियो को होता है इसलिये इसके लिये आवश्यकीय प्रौद्योगिकी विज्ञान ।
- समान वायु :- जो प्राणवायु शरीर के सम्पूर्ण अवयवो रसो और धातुओ में समाविष्ट रहता है ।

D528 1994 I [A] विश्व विद्यापीठ_split_1_c (1985-1995)

• व्यान वायु :- जो मेधस के लिये जीवन संकेतों को ग्रहण करने में ज्ञानवाही तन्तुओं को प्रेरित करने में सहायक होता है।

• उदानवायु :- बल प्रदर्शन और माँस पेशियाँ, नाड़ियों और धातुओं का संयोजन कार्य सहित प्रकाशित हो जाता है। यह वायु शरीर के सम्पूर्ण अवयवों, धातुओं, कोषों के लिये पुष्टि प्रवाहन कार्य सम्पन्न करता है।

• हाइड्रोजन, हीलियम, अमोनिया, ऐसीटीलीन, क्लोरीन, उत्पादन वितरण तथा उपयोग।

• ईंधन गैसें :-

• प्रौद्योगिकी एवं व्यवसाय :- वह है जो विभिन्न पदार्थों के योग में बनने वाले कपड़े, बर्तन आदि वस्तुएं हैं। शीट चादर आदि कार्यों के रूप में देखने को मिलता है।

<u>प्राणावस्था सम्बंधी उद्योग एवं व्यवसाय</u>

...त और वन के रूप में

प्राणावस्था है। प्रधान वस्तु पदार्थावस्था प्राणावस्था की पूरकता है। उसे बनाए रखने के लिये समुचित मापदंड और उसकी प्रौद्योगिकी। काष्ठ सम्बंधी प्रौद्योगिकी एवं व्यवसाय। वनस्पति सम्बंधी प्रौद्योगिकी, औषधि सम्बंधी प्रौद्योगिकी व्यवसाय और वनौषधियों का संरक्षण, संवर्धन उत्पादन कार्य सम्बंधी प्रौद्योगिकी व्यवसाय। आहार प्रौद्योगिकी व्यवसाय। वस्त्र के लिए उद्योग और उससे सम्बंधित उपाय।

• जीवावस्था :- पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था में पूरकता और सन्तुलन। उसके लिये समुचित मापदंड। उसकी प्रौद्योगिकी। जीवों का मनुष्य के लिये सहायक रूप में विभिन्न आयामों में पहचानना और उसके लिये सभी प्रौद्योगिकी व्यवसाय योजनाओं में पारंगत बनाना।

• ज्ञानावस्था :- ~~प्र~~ पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था और ज्ञानावस्था का अन्तर्सम्बंध उसका मापदंड और प्रौद्योगिकी। मनुष्य सहज श्रमशक्ति का उपयोग सदुपयोग और प्रौद्योगिकी के रूप में देने के लिये प्रौद्योगिकी। मनु... शक्ति

ए नागराज, प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
www.madhyasth.org

D528 1994 I [A] विश्व विद्यापीठ_split_1_c (1985-1995)

के सदुपयोग पूर्वक दी गई अखंड सामाजिकता और स्वराज्य व्यवस्था सफल होते हैं।

— नित्यम् यातु शुभोदयम् —

जीवन ज्ञान

" परमाणु ही व्यवस्था का आधार है।"

परमाणु में विकास अर्थात् परमाणु में अंशो की संख्या बढ़ना। आस्तित्व में जो कुछ भी देखते हैं विभक्त और अविभाज्य आस्तित्व। यह सह आस्तित्व वर्तमान है।

सह आस्तित्व में पूरकता के आधार पर परमाणु में विकास, परमाणु स्वयं गठन पूर्वक [एक से अधिक अंशो के गति पथ सहित] एक क्रिया होना दीखती है।

क्रिया स्वयं श्रम गति परिणाम के अविभाज्य रूप में दिखाई पड़ती है। परमाणु के विकास क्रम में अंशो का घटना बढ़ना देखा गया है। इसी क्रम में अनेक प्रजाति के परमाणु विद्यमान है। इसी विधि से गठन तृप्ति एक अनिवार्य विधि और घटना है। यही घटना जीवन पद में देखा गया है। ऐसे गठनपूर्ण होते ही परमाणु, अणु बंधन और भार बंधन से मुक्त होता है। साथ ही आशा बंधन से जीवनी क्रम का प्रकाशन। जीवावस्था इसका प्रमाण और जीवन